CBSE Class 09 Hindi Course B
NCERT Solutions
स्पर्श पाठ-11 नज़ीर अकबराबादी [कविता]

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी के किन-किन रूपों का बखान करती है? क्रम से लिखिए।

उत्तर:- पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी के निम्न रूपों का बखान करती है -
बादशाह, मुफलिस-ओ-गदा, जरदार, बेनवा, निअमत खाने वाला अमीर तथा टुकडे चबाने वाला गरीब ।

2. चारों छंदों में कवि ने आदमी के सकारात्मक और नकारात्मक रूपों को परस्पर किन-किन रूपों में रखा है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-

सकारात्मक रूप	नकारात्मक रूप
आदमी मसजिद बनाता है।	आदमी मसजिद के बाहर जूतियॉ चुराता है।
आदमी इमाम और खुतबाख़्वो बनता है।	आदमी बुरा होता है।
आदमी नमाज और कुरान पडता है।	आदमी ही आदमी की इज्जत उछालता है। उसका अपमान करता है।
आदमी ही आदमी पर जान न्यौछावर करता है।	आदमी ही आदमी को तलवार मारता है। उसकी जान लेता है।
आदमी ही आदमी की एक पुकार पर दौडा चला आता है।	आदमी ही दूसरे आदमी की सहायता नही करता ।

3. 'आदमी नामा' शीर्षक कविता के इन अंशों को पढ़कर आपके मन में मनुष्य के प्रति क्या धारणा बनती है?

उत्तर:- 'आदमी नामा' शीर्षक कविता के इन अंशों को पढ़कर हमारे मन में मनुष्य के प्रति दो प्रकार की धारणा बनती है - एक अच्छी धारणा, दूसरी बुरी धारणा। जो मनुष्य सुविधा व साधन संपन्न है, लेकिन समय पडने पर दूसरो की सहायता नही कर सकता, वह निश्चित रूप से अच्छा मनुष्य नही है। दूसरी ओर, किसी की एक पुकार पर दौडकर सहायता करने लाना एक अच्छे मनुष्य का ही गुण है।

इस प्रकार मनुष्य अपने कार्यो, गुणो तथा क्रियाकलापो से अच्छा बुरा बनता है। मनुष्य चाहे कितना भी सफल एवं समर्थ क्यो न बन जाए, उसमें एक सीमा तक मनुष्यता का होना अपरिहार्य है, अन्यथा वह मनुष्य कहलाने के योग्य नही रह पाएगा। मानवीय मूल्यों की उपस्थिति के बिना मानव की श्रेणी में शामिल होना अर्थपूर्ण नही हो सकता है।

4. इस कविता का कौन-सा भाग आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों?

उत्तर:-इस कविता का पहला भाग मुझे अच्छा लगा, क्योकि इन पंक्तियों में समाज की सच्चाई को प्रस्तुत किया गया है। उॅच-नीच, अमीर-गरीब में विभाजित यह समाज कई तरह की बुराइयों को जन्म देता है। इस कविता का यह अंश अमीर ओर गरीब के बची जमीन-आसमान के उंतर को दर्शाता है और आदमी होने के नाते सामाजिक समता की मॉग करता है।

---

5. आदमी की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:- आदमीनामा कविता से आदमी की निम्नलिखित प्रवतियो का उल्लेख मिलता है

आदमी धार्मिक एवं सांस्कतिक पहचान रखता है।

आदमी चोर भी होता है।

आदमी रक्षक भी होता है।

आदमी हत्यारा भी होता है।

आदमी दुराचार भी होता है।

आदमी सहदयी एवं परोपकारी भी होता है।

आदमी में संत और शैतान दोनो के गुण होते है।

---

2. निम्नलिखित अंशों की व्याख्या कीजिए -
1. दुनिया में बादशाह है सो वह भी आदमी
और मुफ़लिस-ओ-गदा सो है वो भी आदमी
उत्तर:- संसार में हर तरह के आदमी है। यदि कोई राजा या बादशाह है, तो वह भी आदमी ही है और यदि कोई गरीब, दीन-दरिद्र है, तो वह भी आदमी है। बादशाह और गरीब दोनो आदमी ही है। एक के पास ताकत है, तो वह बादशाह है और जो गरीब है, वह निर्बल है।

---

2. अशराफ़ और कमीने से ले शाह ता वो भी आदमी
ये आदमी ही करते हैं सब कारे दिलपजीर
उत्तर:- उँचे तबके से लेकर नीचे तक, राजा से लेकर मंत्री तक तका अच्छे से लेकर बुरे तक सभी आदमी है। ये आदमी ही होते है, जो अपने कामों से लोगों के दिलों को लुभा लेते है।

3.1 निम्नलिखित में अभिव्यक्त व्यंग को स्पष्ट कीजिए -
पढ़ते है आदमी ही कुरआन और नमाज़ यां

और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ
जो उनको ताड़ता है सो वो भी आदमी
उत्तर:- कवि कहता है एक आदमी तो कुरान और नमाज पडने जैसा पवित्र काम करता है, और वही एक आदमी जूतियॉं चुराने जैसा निम्नस्तरीय काम भी करता है ओर उनके देखने या पकडने का काम भी आदमी ही करता है। कवि ने आदमी के इस दोहरे चरित्र पर व्यंग्य किया है।

3.2 पगड़ी भी आदमी को उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुनके दौड़ता है सो वो भी आदमी
उत्तर:- आदमी दूसरे आदमी की इज्जत से खेलने तथा उसके सम्मान को ठेस पहॅंचाने का भी काम करता है, वही एक अन्य आदमी एक असहाय एवं बेबस आदमी की पुकार सुनकर उसकी सहायता हेतु दौडा चला आता है। इसके माध्यम से कवि ने व्यक्तियों के चरित्र में व्याप्त सदगुणो पर व्यंग्य किया है।

---

4. नीचे लिखे शब्दों का उच्चारण कीजिए और समझिए कि किस प्रकार नुक्ते के कारण उनमें अर्थ परिवर्तन आ गया है।
राज़(रहस्य)
राज(शासन)
ज़रा(थोड़ा)
जरा(बुढ़ापा)
फ़न(कौशल)
फन(साँप का मुँह)
फ़लक(आकाश)
फलक(लकड़ी का तख्ता)
ज़ फ़ से युक्त दो-दो शब्दों को और लिखिए।
उत्तर:- ज़ - ज़ख्मी, जजबात
फ़ - फकीर, फतेह

---

5. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -
(क) टुकडे चबाना
(ख) पगड़ी उतारना
(ग) मुरीद होना
(घ) जान वरना
(ड.) तेग मारना
उत्तर:-

मुहावरे	वाक्य-प्रयोग
टुकडे चबाना	जंगल में मयंक को दो दिन टुकडे चबाकर ही रहना पडा।
पगड़ी उतारना	गॉव में वर्षो से सम्मानित बुजुर्ग रामदीन की शहर के कुछ लोगो न पगडी उछाल दी।
मुरीद होना	मैं गीतकार गुलजार साहब की मुरीद हूँ।
जान वारना	हमारे भारतीय सिपाही देश के लिए जान वारने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।
तेग मारना	राकेश ने अपने भाई को तेग मारकर घायल कर दिया।